रविवार 17 जनवरी, 2021

विषय — जिंदगी

स्वर्ण पाठ: **रोमियो 6 : 23**

"परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥"

उत्तरदायी अध्ययन: **यूहन्ना 17 : 1, 3**
रोमियो 8 : 1-4, 6

1 यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखे आकाश की ओर उठाकर कहा, हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची,
अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।
3 और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है,
जाने।
1 सोअब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के
अनुसार चलते हैं।
2 क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र
कर दिया।
3 क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात
अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में
पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।
4 इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की
जाए।
6 शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यूहन्ना 1 : 1, 3, 4

1 आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।

3 सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना
उत्पन्न न हुई।
4 उस में जीवन था; और वह जीवन मुनष्यों की ज्योति थी।

2. यूहन्ना 3 : 10 (यीशु) *केवल*, 10 (कहा) *केवल*, 14 (जिस रीति)-17

10 यीशु ... कहा।
14 ... जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी
ऊंचे पर चढ़ाया जाए।
15 ताकि जो कोई विश्वास करे उस में अनन्त जीवन पाए॥
16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस
पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।
17 परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि
जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।

3. यूहन्ना 6 : 35, 38, 40 (*से* :), 63

35 यीशु ने उन से कहा, जीवन की रोटी मैं हूं: जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर
विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न होगा।
38 क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, वरन अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूं।
40 क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है, कि जो कोई पुत्र को देखे, और उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन
पाए।
63 आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं वे आत्मा है, और
जीवन भी हैं।

4. लूका 10 : 25-37

25 और देखो, एक व्यवस्थापक उठा; और यह कहकर, उस की परीक्षा करने लगा; कि हे गुरू, अनन्त
जीवन का वारिस होने के लिये मैं क्या करूं?
26 उस ने उस से कहा; कि व्यवस्था में क्या लिखा है तू कैसे पढ़ता है?
27 उस ने उत्तर दिया, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी
शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।
28 उस ने उस से कहा, तू ने ठीक उत्तर दिया है, यही कर: तो तू जीवित रहेगा।

29 परन्तु उस ने अपनी तईं धर्मी ठहराने की इच्छा से यीशु से पूछा, तो मेरा पड़ोसी कौन है?
30 यीशु ने उत्तर दिया; कि एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को जा रहा था, कि डाकुओं ने घेरकर उसके कपड़े उतार लिए, और मार पीट कर उसे अधमूआ छोड़कर चले गए।
31 और ऐसा हुआ; कि उसी मार्ग से एक याजक जा रहा था: परन्तु उसे देख के कतरा कर चला गया।
32 इसी रीति से एक लेवी उस जगह पर आया, वह भी उसे देख के कतरा कर चला गया।
33 परन्तु एक सामरी यात्री वहां आ निकला, और उसे देखकर तरस खाया।
34 और उसके पास आकर और उसके घावों पर तेल और दाखरस डालकर पट्टियां बान्धी, और अपनी सवारी पर चढ़ाकर सराय में ले गया, और उस की सेवा टहल की।
35 दूसरे दिन उस ने दो दिनार निकालकर भटियारे को दिए, और कहा; इस की सेवा टहल करना, और जो कुछ तेरा और लगेगा, वह मैं लौटने पर तुझे भर दूंगा।
36 अब तेरी समझ में जो डाकुओं में घिर गया था, इन तीनों में से उसका पड़ोसी कौन ठहरा?
37 उस ने कहा, वही जिस ने उस पर तरस खाया: यीशु ने उस से कहा, जा, तू भी ऐसा ही कर॥

5. यूहन्ना 5 : 24, 25 (मैं), 26, 28, 29

24 मैं तुम से सच सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।
25 मैं तुम से सच सच कहता हूं, वह समय आता है, और अब है, जिस में मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएंगे।
26 क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे।
28 इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे।
29 जिन्हों ने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्हों ने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।

6. यूहन्ना 8 : 51

51 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक मृत्यु को न देखेगा।

7. गलातियों 6 : 7-10

7 धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।
8 क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।
9 हम भले काम करने में हियाव न छोड़े, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।
10 इसलिये जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ॥

8. 1 यूहन्ना 2 : 15-17

15 तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस में पिता का प्रेम नहीं है।
16 क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है।
17 और संसार और उस की अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा॥

9. I यूहन्ना 5 : 20

20 और यह भी जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उस ने हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे को पहचानें, और हम उस में जो सत्य है, अर्थात उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं: सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 246 : 27-31

जीवन शाश्वत है। हमें इसका पता लगाना चाहिए, और इसके बाद प्रदर्शन शुरू करना चाहिए। जीवन और अच्छाई अमर है। आइए फिर हम उम्र और तुषार के बजाय अपने अस्तित्व के विचारों को प्रेम, ताजगी और निरंतरता में आकार दें।

2. 331 : 1 (परमेश्वर)-6

ईश्वर दिव्य जीवन है, और जीवन उन रूपों तक सीमित नहीं है, जो पदार्थ की तुलना में उसकी छाया में हैं। यदि जीवन नश्वर मनुष्य या भौतिक चीजों में होता, तो यह उनकी सीमाओं के अधीन होता और मृत्यु में समाप्त हो जाता। जीवन मन है, रचनाकार अपनी रचनाओं में परिलक्षित होता है।

3. 434 : 31 (परमेश्वर)-32

परमेश्वर ने मनुष्य को केवल आत्मा के लिए अमर और उत्तरदायी बनाया।

4. 209 : 1-4

मनुष्य, अमर होने के नाते, एक आदर्श अविनाशी जीवन है यह नश्वर विश्वास है जो शरीर को अज्ञानता, भय के रूप में अनुपातहीन और रोगग्रस्त बनाता है या मानव नश्वरों को नियंत्रित करेगा।

5. 429 : 31-12

यीशु ने कहा (यूहन्ना 8: 51), "यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक मृत्यु को न देखेगा।" यह कथन आध्यात्मिक जीवन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें अस्तित्व की सभी घटनाएं शामिल हैं। यीशु ने यह प्रदर्शित किया, मरते हुए और मृतकों को ऊपर उठाते हुए। नश्वर मन को त्रुटि के साथ भाग लेना चाहिए, अपने कर्मों से खुद को दूर करना चाहिए, और अमर आदर्श मर्दानगी, मसीह आदर्श दिखाई देगा। विश्वास को अपनी सीमाओं को बढ़ाना चाहिए और पदार्थ के बजाय आत्मा पर आराम करके अपने आधार को मजबूत करना चाहिए। जब मनुष्य मृत्यु पर अपना विश्वास छोड़ देता है, तो वह ईश्वर, जीवन और प्रेम की ओर अधिक तेजी से आगे बढ़ेगा। बीमारी और मृत्यु में विश्वास, निश्चित रूप से पाप में विश्वास के रूप में, जीवन और स्वास्थ्य की सही भावना को बंद करने के लिए जाता है। मानव जाति विज्ञान के इस महान तथ्य को कब जगाएगी?

6. 25 : 13-19

यीशु ने प्रदर्शन के द्वारा जीवन का मार्ग सिखाया, कि हम समझ सकते हैं कि यह दिव्य सिद्धांत कैसे बीमारों को चंगा करता है, त्रुटि को जन्म देता है, और मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है। यीशु ने ईश्वर के आदर्श को किसी भी ऐसे व्यक्ति की तुलना में बेहतर प्रस्तुत किया जिसकी उत्पत्ति कम आध्यात्मिक थी। परमेश्वर की आज्ञाकारिता के द्वारा, उसने आध्यात्मिक रूप से सभी दूसरों के सिद्धांत का प्रदर्शन किया।

7. 26 : 28-32

हमारे मास्टर ने कोई विचार, सिद्धांत या विश्वास नहीं सिखाया। यह सभी वास्तविक लोगों का दिव्य सिद्धांत था जो उन्होंने सिखाया और अभ्यास किया। ईसाई धर्म का उनका प्रमाण धर्म और पूजा का कोई रूप या प्रणाली नहीं था, लेकिन क्रिश्चियन साइंस, जो जीवन और प्रेम के सामंजस्य को दर्शाता है।

8. 27 : 10-21

यीशु ने अपने वैज्ञानिक कथन के अनुसार सूली पर चढ़ाए जाने के बाद अपने पुन: प्रकट होने से सिद्ध किया कि जीवन ईश्वर है: "मन्दिर(शरीर) को ढा दो, और मैं (आत्मा)उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।" यह ऐसा है जैसे उसने कहा था: मैं - ब्रह्मांड का जीवन, पदार्थ, और बुद्धि - नष्ट होने के लिए नहीं है।

यीशु के दृष्टांत जीवन को पाप और मृत्यु के साथ कभी भी मेल नहीं खाते के रूप में समझाते हैं। उन्होंने भौतिक ज्ञान के मूल में विज्ञान की कुल्हाड़ी को रखा, कि वह पैंटीवाद के झूठे सिद्धांत को काटने के लिए तैयार हो सकता है, - कि ईश्वर, या जीवन, सामग्री में है।

9. 51 : 15-21

वह जानता था कि इस मामले का कोई जीवन नहीं था और वह वास्तविक जीवन भगवान है; इसलिए वह अपने आध्यात्मिक जीवन से अलग नहीं हो सकता है क्योंकि भगवान को बुझाया जा सकता है।

उनका घाघ उदाहरण हम सभी के उद्धार के लिए था, लेकिन केवल उन कार्यों को करने के माध्यम से जो उन्होंने किए और दूसरों को करना सिखाया।

10. 289 : 1-7

सत्य का प्रदर्शन शाश्वत जीवन है। नश्वर मनुष्य कभी भी त्रुटि, पाप, बीमारी, और मृत्यु में विश्वास की लौकिक दुर्बलता से नहीं उठ सकता, जब तक कि वह यह न जान ले कि ईश्वर ही एकमात्र जीवन है। यह विश्वास कि जीवन और संवेदना शरीर में हैं, मनुष्य को ईश्वर की छवि के रूप में समझने की समझ से दूर होना चाहिए। तब आत्मा ने देह पर काबू पा लिया होगा।

11. 305 : 22-30

जीवन के भ्रम में जो आज यहां है और कल चला जाएगा, मनुष्य पूरी तरह से नश्वर हो जाएगा, क्या यह नहीं था कि प्रेम, दिव्य सिद्धांत जो दिव्य विज्ञान में प्राप्त होता है, सभी त्रुटि को नष्ट कर देता है और प्रकाश में अमरता

लाता है। क्योंकि मनुष्य अपने निर्माता का प्रतिबिंब है, इसलिए वह जन्म, विकास, परिपक्वता, क्षय के अधीन नहीं है। ये नश्वर सपने मानव मूल के हैं, परमात्मा के नहीं।

12. 317 : 16-20

मनुष्य का व्यक्तित्व कम मूर्त नहीं है क्योंकि यह आध्यात्मिक है और क्योंकि उसका जीवन पदार्थ की दया पर नहीं है। उनकी आध्यात्मिक व्यक्तित्व की समझ, मनुष्य को सच्चाई में अधिक वास्तविक, अधिक दुर्जेय बनाती है और उसे पाप, बीमारी और मृत्यु पर विजय प्राप्त करने में सक्षम बनाती है।

13. 324 : 13 (होना)-18

चौकस, शांत और सतर्क रहें। जिस मार्ग से यह समझ पैदा होती है कि ईश्वर ही एकमात्र जीवन है, सीधा और संकीर्ण है। यह मांस के साथ एक युद्ध है, जिसमें हमें पाप, बीमारी, और मृत्यु पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, या तो इसके बाद, या - निश्चित रूप से इससे पहले कि हम आत्मा के लक्ष्य तक पहुँच सकें, या परमेश्वर में जीवन पा सकें।

14. 322 : 3-13

जब एक सामग्री से आध्यात्मिक आधार पर जीवन और बुद्धिमत्ता के दृष्टिकोण को बदलते हैं, हम जीवन की वास्तविकता प्राप्त करेंगे, आत्मा का नियंत्रण और हम अपने ईश्वरीय सिद्धांत में ईसाई धर्म या सत्य का अनुभव करेंगे। यह सामंजस्यपूर्ण और अमर आदमी प्राप्त होने से पहले चरमोत्कर्ष होना चाहिए और उसकी क्षमताओं का पता चला। यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है - दिव्य विज्ञान की इस मान्यता के आने से पहले पूरा होने वाले अपार कार्य के मद्देनजर - अपने विचारों को दिव्य सिद्धांत की ओर मोड़ने के लिए, कि परिमित विश्वास अपनी त्रुटि को त्यागने के लिए तैयार हो सकता है।

15. 496 : 9 (हम)-27

हम सभी को यह सीखना चाहिए कि जीवन ईश्वर है। अपने आप से पूछें: क्या मैं उस जीवन को जी रहा हूं जो सर्वोच्च भलाई के लिए है? क्या मैं सत्य और प्रेम की उपचार शक्ति का प्रदर्शन कर रहा हूँ? यदि ऐसा है, तो रास्ता उज्जवल हो जाएगा "पूरे दिन तक।" आपका फल यह साबित करेगा कि परमेश्वर की समझ मनुष्य को क्या लाती है। शाश्वत रूप से इस विचार पर दृढ़ रहें, - कि यह आध्यात्मिक विचार है, पवित्र आत्मा और मसीह, जो आपको वैज्ञानिक निश्चितता के साथ, अपने ईश्वरीय सिद्धांत, प्रेम, अंतर्निहित, अतिव्यापी, और सभी को शामिल करने के आधार पर प्रदर्शित करने में सक्षम बनाता है।

"मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है," — नश्वर विश्वास के कानून, अमर जीवन के तथ्यों के साथ युद्ध पर, यहां तक कि आध्यात्मिक कानून जो कब्र को कहते हैं, "तुम्हारी जीत कहाँ है?" परंतु "जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तक वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया।"

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6